क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज का 36 कुलों का संघ: इतिहास, परंपरा और अस्तित्व की रक्षा

ऋग्वैदिक काल से ही भारत में क्षत्रियों की परंपरा केवल व्यक्तिगत वीरता तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह एक संगठित शक्ति के रूप में भी प्रकट होती रही है। प्राचीन इतिहास में यह उल्लेख मिलता है कि जब भी धर्म, राष्ट्र और संस्कृति पर संकट आया, तब क्षत्रिय समाज ने संघ के रूप में संगठित होकर संघर्ष किया। ऐसे ही उदाहरणों में बारह राजाओं के संघ द्वारा एकजुट होकर युद्ध लड़ने का उल्लेख मिलता है। इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए सम्राट विक्रमादित्य ने भी क्षत्रियों का एक विशाल संघ संगठित कर शकों के विरुद्ध विजय प्राप्त की और अवंती (उज्जैन) राज्य की कीर्ति को सम्पूर्ण विश्व में फैलाया। उज्जैनी नगरी में यह संगठित क्षत्रिय शक्ति केवल राजनीतिक ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी अत्यंत सशक्त थी। यह संगठन समय के साथ भी जीवित रहा और आवश्यकता पड़ने पर पुनः सक्रिय होता रहा।

इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं जब 36 क्षत्रिय कुलों का संघ युद्ध और संकट के समय एकत्रित हुआ। जब पृथ्वीराज चौहान युद्ध के लिए अग्रसर हुए, तब उन्होंने 36 क्षत्रियों का आहवान किया, जिसका उल्लेख पृथ्वीराज रासो में मिलता है। इसी प्रकार राजा भोज की पुत्री नागमती द्वारा छत्तीस कुलों का आहवान कर उनसे अपने दुःख को व्यक्त करने का उल्लेख बीसलदेव रासो में मिलता है। अर्थात मालवा में भी इस परंपरा का सशक्त उदाहरण मिलता है, जो समाज में व्यापक रूप से प्रचलित हुआ।

बुंदेलखंड के वीर महाराजा छत्रसाल बुंदेला ने भी मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में इसी क्षत्रिय संघ की शक्ति का उपयोग किया। उनके सहयोग में विभिन्न क्षत्रिय कुलों के साथ-साथ अन्य सहयोगी भी जुड़े। मध्य भारत में महीपत शाह जैसे वीरों ने भी इस परंपरा को निभाते हुए सहयोग प्रदान किया। इतिहास के अनुसार, यही 36 क्षत्रिय कुलों का संघ मध्य भारत में एकत्रित होकर रामटेक के समीप नगरधन क्षेत्र में संगठित हुआ। यहाँ गोंड राजाओं और मराठों के साथ मिलकर मुगल सम्राट औरंगज़ेब के प्रभाव को चुनौती दी गई और विजय प्राप्त कर नागपुर क्षेत्र में स्वतंत्र सत्ता की स्थापना की गई। इस संघर्ष और सहयोग के परिणामस्वरूप इन क्षत्रिय कुलों को भूमि, किले, पद और प्रतिष्ठा प्राप्त हुई तथा वे अपने परिवारों के साथ इस क्षेत्र में स्थायी रूप से बस गए।

मराठा काल में भी 36 क्षत्रिय कुलों की यह भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। उन्होंने शासन और समाज दोनों में सक्रिय योगदान दिया, जिसके फलस्वरूप उन्हें व्यापक क्षेत्र और सम्मान प्राप्त हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि क्षत्रिय पोवार (पंवार) समाज के पूर्वज 36 क्षत्रिय कुलों के रूप में एक संगठित सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति रहे हैं। आज भी मध्य भारत में इन कुलों के वंशज अपनी प्राचीन पहचान, परंपरा और संस्कृति के साथ विद्यमान हैं। यह समाज अपने गौरवशाली इतिहास को स्मरण करते हुए अपने मूल अस्तित्व के संरक्षण के लिए निरंतर प्रयासरत है।

समाज के प्रमुख संगठन, अखिल भारतीय क्षत्रिय पंवार (पोवार) महासंघ, इस दिशा में सतत कार्य कर रहा है। यह संगठन समाज की संस्कृति, भाषा, इतिहास और परंपराओं

के संरक्षण और संवर्धन के लिए अनेक कार्यक्रम चला रहा है, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपने वास्तविक इतिहास और पहचान से जुड़ी रहें।

हालांकि, वर्तमान समय में कुछ ऐसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जहाँ कुछ स्वार्थी तत्व समाज के इतिहास को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत कर रहे हैं और भ्रामक व मनगढ़ंत तथ्यों के माध्यम से समाज की पहचान को प्रभावित करने का प्रयास कर रहे हैं। यह स्थिति समाज के लिए एक गंभीर चुनौती है। आज समाज के सामने दो मार्ग हैं, एक सत्य, वास्तविक और प्रमाणिक इतिहास का, और दूसरा झूठे, काल्पनिक, भ्रमित करने वाले और मनगढ़ंत दावों का। यह समाज के प्रत्येक व्यक्ति और संगठन का दायित्व है कि वह सत्य का साथ दे, क्योंकि यह अटल सत्य है कि "सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन कभी पराजित नहीं होता।"

अतः आवश्यक है कि हम अपने पूर्वजों की विरासत, अपनी संस्कृति, भाषा और परंपराओं का संरक्षण करें। 36 क्षत्रिय कुलों की संघीय परंपरा केवल इतिहास नहीं, बल्कि हमारी पहचान है, जिसे हर हाल में सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। समाज के सभी संगठनों और सदस्यों को एकजुट होकर अपनी सांस्कृतिक धरोहर, गौरवशाली परंपराओं और मूल अस्तित्व की रक्षा के लिए कार्य करना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियों को उनकी सही और वास्तविक पहचान मिल सके।

अखिल भारतीय क्षत्रिय पोवार(पंवार) महासंघ